17 to 22 January current

YOJNA IAS

CURRENT AFFAIRS

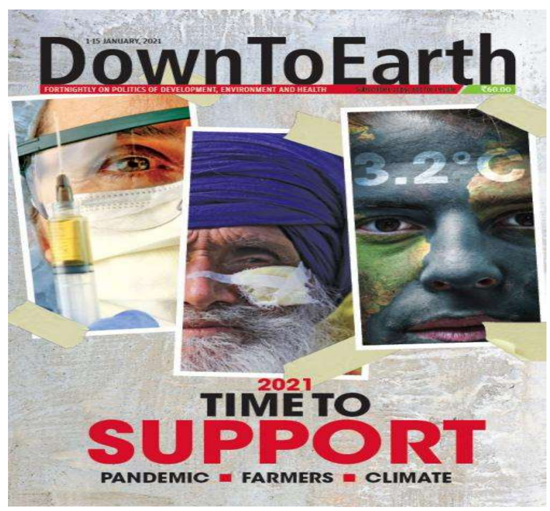

फिशरीज़ स्टार्टअप

- हाल ही में मत्स्य पालन विभाग, मत्स्य पालन, पशुपालन व डेयरी मंत्रालय स्टार्टअप इंडिया के सहयोग से वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने फिशरीज़ स्टार्टअप ग्रैंड चैलेंज का उदघाटन किया।

परिचय:

- यह चुनौती देश के भीतर स्टार्ट-अप्स को मत्स्य पालन और जलीय कृषि क्षेत्र के भीतर अपने अभिनव समाधानों को प्रदर्शित करने के लिये एक मंच प्रदान करने के उद्देश्य से शुरू की गई है।
- जलीय कृषि उत्पादकता को वर्तमान राष्ट्रीय औसत 3 टन से बढ़ाकर 5 टन प्रति हेक्टेयर करने, निर्यात आय को दोगुना करने और फसल के बाद के नुकसान को 25% से 10% तक कम करने के लिये तथा मत्स्य पालन मूल्य श्रृंखला में मुद्दों को हल करने हेतु समाधान खोजे जाने चाहिये।
- इस क्षेत्र के सामने स्टार्ट-अप संस्कृति को बढ़ावा देने और उद्यमिता मॉडल की एक मज़बूत नींव स्थापित करने की चुनौती है, मत्स्य विभाग ने इस चुनौती के लिये 3.44 करोड़ रुपए की धनराशि निर्धारित की है।

संबंधित पहल:

- वर्ष 2018-19 के दौरान मात्स्यिकी एवं जलीय कृषि अवसंरचना विकास निधि (FIDF) की स्थापना।
- **प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना:** कार्यक्रम का लक्ष्य 2024-25 तक 22 मिलियन टन मछली उत्पादन लक्ष्य हासिल करना है। साथ ही इससे 55 लाख लोगों के लिये रोज़गार के अवसर पैदा होने की उम्मीद है।
- **नीली क्रांति:** यह मछुआरों और मछली किसानों के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिये मत्स्य पालन के एकीकृत व समग्र विकास एवं प्रबंधन हेतु एक सक्षम वातावरण बनाने पर ध्यान केंद्रित करती है।

- मछुआरों और मछली किसानों को उनकी कार्यशील पूंजी की ज़रूरतों को पूरा करने में मदद करने के लिये किसान क्रेडिट कार्ड की सुविधाओं का विस्तार।
- **समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण: एमपीईडीए** एक नोडल समन्वयक, राज्य के स्वामित्त्व वाली एजेंसी है जो मत्स्य उत्पादन और संबद्ध गतिविधियों में लगी हुई है।
- **समुद्री मात्स्यिकी विधेयक:** विधेयक में केवल मर्चेंट शिपिंग एक्ट, 1958 के तहत पंजीकृत जहाजों को अनन्य आर्थिक क्षेत्र (EEZ) में मछली पकड़ने के लिये लाइसेंस देने का प्रस्ताव है।
- **समुद्री शैवाल पार्क:** तमिलनाडु में बहुउद्देशीय समुद्री शैवाल पार्क हब और स्पोक मॉडल पर विकसित गुणवत्ता वाले समुद्री शैवाल आधारित उत्पादों का केंद्र होगा।

मत्स्य पालन क्षेत्र का महत्त्व:

- मत्स्य पालन क्षेत्र देश के आर्थिक और समग्र विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। "सूर्योदय क्षेत्र" के रूप में संदर्भित, मत्स्य पालन क्षेत्र में समान और समावेशी विकास की अपार संभावनाएँ है।
- भारत दुनिया में जलीय कृषि के माध्यम से मछली का दूसरा प्रमुख उत्पादक है।
- भारत दुनिया में मछली का चौथा सबसे बड़ा निर्यातक है क्योंकि यह वैश्विक मछली उत्पादन में 7.7% का योगदान देता है।
- वर्तमान में यह क्षेत्र देश के भीतर 2.8 करोड़ से अधिक लोगों को आजीविका प्रदान करता है। फिर भी, यह अप्रयुक्त क्षमता वाला क्षेत्र बना हुआ है।
- भारत के आर्थिक सर्वेक्षण, 2019-20 का अनुमान है कि अब तक देश की अंतर्देशीय क्षमता का केवल 58% का ही दोहन किया गया है।
- मात्स्यिकी क्षेत्र में मौजूद समग्र क्षमता स्केलेबल व्यापार समाधान लाने और मछुआरों और मछली किसानों हेतु लाभ को अधिकतम करने के लिये विभिन्न अवसर प्रदान करती है।
- प्राथमिक उत्पादक क्षेत्रों में मत्स्य पालन सबसे तेज़ी से बढ़ने वाले क्षेत्रों में से एक है।

- हालाँकि, मात्स्यिकी क्षेत्र की वास्तविक क्षमता का एहसास करने के लिये मात्स्यिकी मूल्य शृंखला की दक्षता और उत्पादन को बढ़ाने हेतु तकनीकी उपायों की आवश्यकता है।

कत्थक

- हाल ही में मशहूर **कत्थक डांसर पंडित मुन्ना शुक्ला** का निधन हो गया।

- उनकी सबसे प्रसिद्ध कृतियों में **नृत्य-नाटक शान-ए-मुगल, इंदर सभा, अमीर खुसरो, अंग मुक्ति, अन्वेषा, बहार, त्राटक, क्रौंच बढ़, धुनी** शामिल हैं।
- नृत्य की दुनिया में उनके योगदान को **संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (2006), साहित्य कला परिषद पुरस्कार (2003)** और **सरस्वती सम्मान (2011)** से सम्मानित किया गया था।

परिचय:

- कत्थक शब्द का उदभव कथा शब्द से हुआ है जिसका शाब्दिक अर्थ है कथा कहना। यह नृत्य मुख्य रूप से उत्तरी भारत में किया जाता है।
- यह मुख्य रूप से एक मंदिर या गाँव का प्रदर्शन था जिसमें नर्तक प्राचीन ग्रंथों की कहानियाँ सुनाते थे।
- यह भारत के **शास्त्रीय नृत्यों** में से एक है।

विकास:

- पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में **भक्ति आंदोलन** के प्रसार के साथ कत्थक नृत्य एक विशिष्ट विधा के रूप में विकसित हुआ।
- राधा-कृष्ण की किंवदंतियों को सर्वप्रथम 'रास लीला' नामक लोक नाटकों में प्रयोग किया गया था, जिसमें बाद में कत्थक कथाकारों के मूल इशारों के साथ लोक नृत्य को भी जोड़ा गया।

- कत्थक को मुगल सम्राटों और उनके रईसों के अधीन दरबार में प्रदर्शित किया जाता था, जहाँ इसने अपनी वर्तमान विशेषताओं को प्राप्त कर लिया और एक विशिष्ट शैली के रूप में विकसित हुआ।
- अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह के संरक्षण में यह एक प्रमुख कला रूप में विकसित हुआ।

नृत्य शैली:

- आमतौर पर एक एकल कथाकार या नर्तक छंदों का पाठ करने हेतु कुछ समय के लिये रुकता है और उसके बाद शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से उनका प्रदर्शन होता है।
- इस दौरान पैरों की गति पर अधिक ध्यान दिया जाता है; 'एंकल-बेल' पहने नर्तकियों द्वारा शरीर की गति को कुशलता से नियंत्रित किया जाता है और सीधे पैरों से प्रदर्शन किया जाता है।
- 'तत्कार' कत्थक में मूलतः पैरों की गति ही शामिल होती है।
- कत्थक शास्त्रीय नृत्य का एकमात्र रूप है जो हिंदुस्तानी या उत्तर भारतीय संगीत से संबंधित है।
- कुछ प्रमुख नर्तकों में बिरजू महाराज, सितारा देवी शामिल हैं।

भारत में अन्य शास्त्रीय नृत्य

- तमिलनाडु- भरतनाट्यम
- कथकली- केरल
- कुचिपुड़ी- आंध्रप्रदेश
- ओडिसी- ओडिशा
- सत्रिया- असम
- मणिपुरी- मणिपुर
- मोहिनीअट्टम- केरल

YOJNA IAS

भक्ति आंदोलन:

- भक्ति आंदोलन का विकास सातवीं और नौवीं शताब्दी के बीच तमिलनाडु में हुआ।
- यह नयनार (शिव के भक्त) और अलवर (विष्णु के भक्त) की भावनात्मक कविताओं में परिलक्षित होता था।

- ये संत धर्म को मात्र औपचारिक पूजा के रूप में नहीं बल्कि पूजा करने वाले और उपासक के मध्य प्रेम पर आधारित एक प्रेम बंधन के रूप में देखते थे।
- उन्होंने स्थानीय भाषाओं, तमिल और तेलुगू में लिखा और इसलिये वे कई लोगों तक पहुँचने में सक्षम थे।
- समय के साथ दक्षिण के विचार उत्तर की ओर बढ़े लेकिन यह बहुत धीमी प्रक्रिया थी।
- भक्ति विचारधारा को फैलाने का एक अधिक प्रभावी तरीका स्थानीय भाषाओं का उपयोग था। भक्ति संतों ने अपने छंदों की रचना स्थानीय भाषाओं में की।
- उन्होंने व्यापक स्तर पर दर्शकों के लिये उन्हें समझने योग्य बनाने हेतु संस्कृत में अनुवाद भी किया। उदाहरणतः मराठी में ज्ञानदेव, हिंदी में कबीर, सूरदास और तुलसीदास, असमिया को लोकप्रिय बनाने वाले शंकरदेव, बंगाली में अपना संदेश फैलाने वाले चैतन्य और चंडीदास, हिंदी में मीराबाई और राजस्थानी शामिल हैं।

भारत-चीन: कोर कमांडर वार्ता

- हाल ही में भारत और चीन के बीच कोर कमांडर स्तर की 14वें दौर की वार्ता संपन्न हुई। बैठक के परिणामस्वरूप हॉट स्प्रिंग्स और गोगरा पोस्ट से पीछे हटने के मामले में कोई सफलता नहीं मिली, लेकिन दोनों ही पक्षों द्वारा शीघ्र ही फिर से मिलने पर सहमति व्यक्त की गई।

- पिछली बैठक की तुलना में यह बैठक सकारात्मक रही क्योंकि पिछली वार्ता के दौरान कोई संयुक्त बयान जारी नहीं किया गया था लेकिन दोनों पक्षों ने स्थिति के लिये एक-दूसरे को दोषी ठहराते हुए स्वतंत्र बयान जारी किये थे।

हॉट स्प्रिंग्स और गोगरा पोस्ट की अवस्थिति:

- **हॉट स्प्रिंग्स चांग चेनमो (Chang Chenmo) नदी के उत्तर में** है और **गोगरा पोस्ट** इस नदी के गलवान घाटी से दक्षिण-पूर्व दिशा से दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़ने पर बने **हेयरपिन मोड़** (Hairpin Bend) के पूर्व में है।
- यह क्षेत्र **काराकोरम श्रेणी** (Karakoram Range) के उत्तर में है जो **पैंगोंग त्सो (Pangong Tso) झील के उत्तर में और गलवान घाटी के दक्षिण में** स्थित है।

हॉट स्प्रिंग्स और गोगरा पोस्ट का महत्त्व

- यह क्षेत्र **कोंग्का दर्रे (Kongka Pass) के पास** है जो चीन के अनुसार भारत और चीन के बीच की सीमा को चिह्नित करता है।
- भारत की अंतर्राष्ट्रीय सीमा का दावा पूर्व की ओर अधिक है, क्योंकि इसमें पूरा **अक्साई चिन** (Aksai Chin) का क्षेत्र भी शामिल है।
- हॉट स्प्रिंग्स और गोगरा पोस्ट, चीन के **दो सबसे अशांत प्रांतों (शिनजियांग और तिब्बत) की सीमा के करीब** हैं।

पैंगोंग त्सो झील

- पैंगोंग झील केंद्रशासित प्रदेश **लद्दाख** में स्थित है।
- यह लगभग 4,350 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है, जो विश्व की सबसे ऊँचाई पर स्थित खारे पानी की झील है।
- लगभग 160 किमी. क्षेत्र में फैली पैंगोंग झील का एक-तिहाई हिस्सा भारत में है और दो-तिहाई हिस्सा चीन में है।

गलवान घाटी

- गलवान घाटी सामान्यतः उस भूमि को संदर्भित करती है, जो **गलवान नदी** (Galwan River) के पास मौजूद पहाड़ियों के बीच स्थित है।
- गलवान नदी का स्रोत चीन की ओर अक्साई चिन में मौजूद है और आगे चलकर यह भारत की **श्योक नदी** (Shyok River) में मिलती है।

- ध्यातव्य है कि यह घाटी पश्चिम में लद्दाख और पूर्व में अक्साई चिन के बीच स्थित है, जिसके कारण यह रणनीतिक रूप से काफी महत्त्वपूर्ण है।

चांग चेनमो नदी

- यह श्योक नदी की सहायक नदी है, जो **सिंधु नदी (Indus River) प्रणाली** का हिस्सा है।
- यह विवादित अक्साई चिन क्षेत्र के दक्षिणी किनारे पर और पैंगोंग झील बेसिन के उत्तर में स्थित है।
- चांग चेनमो का स्रोत **लनक दर्रे** (Lanak Pass) के पास है।

कोंग्का दर्रा

- कोंग्का दर्रा या कोंग्का ला एक पहाड़ी दर्रा है, जिससे चांग चेनमो घाटी में प्रवेश किया जाता है। यह लद्दाख में विवादित भारत-चीन सीमा क्षेत्र में है।

काराकोरम श्रेणी

- इसे कृष्णगिरि के नाम से भी जाना जाता है जो ट्रांस-हिमालय पर्वतमाला की सबसे उत्तरी श्रेणी में स्थित है। यह अफगानिस्तान और चीन के साथ भारत की सीमा बनाती है।
- यह पामीर से पूर्व की ओर लगभग 800 किमी. तक फैली हुई है। यह ऊँची चोटियों [5,500 मीटर और उससे अधिक ऊँचाई] के साथ एक सीमा है।
- कुछ चोटियाँ समुद्र तल से 8,000 मीटर से अधिक ऊँची हैं। इस श्रेणी में पृथ्वी की कई शीर्ष चोटियाँ स्थित हैं जैसे- **K2**, जिसकी ऊँचाई 8,611 मीटर है तथा जो विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है।
- लद्दाख पठार काराकोरम श्रेणी के उत्तर-पूर्व में स्थित है।

कला कुंभ-कलाकार कार्यशाला

- **आज़ादी के अमृत महोत्सव** के भव्य समारोह के हिस्से के रूप में संस्कृति मंत्रालय ने रक्षा मंत्रालय के सहयोग से स्क्रॉल पेंटिंग के लिये कला कुंभ कलाकार कार्यशालाओं का आयोजन किया।

- प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों के साथ महानिदेशक, एनजीएमए (नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट) ने स्क्रॉल पेंटिंग कार्यशालाओं के लिये संरक्षक के रूप में काम किया।

परिचय:

- इन कलाकृतियों का प्रमुख विषय भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के गुमनाम नायकों से संबंधित है।
- अन्य प्रख्यात कलाकारों और सुलेखकों की एक टीम के साथ बंगाल स्कूल के आधुनिक भारतीय कला के प्रमुख आचार्यों में से एक **नंदलाल बोस** द्वारा भारत के संविधान में दिये गए दृष्टांतों से भी प्रेरणा ली गई है।

नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट:

- यह एक राष्ट्रीय प्रमुख संस्थान है जिसकी स्थापना वर्ष 1954 में तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन ने प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की उपस्थिति में की थी।
- NGMA देश के सांस्कृतिक लोकाचार का भंडार है और विभिन्न कला के क्षेत्रों में वर्ष 1857 से शुरू होकर पिछले डेढ़ सौ वर्षों के दौरान बदलते कला रूपों को प्रदर्शित करता रहा है।
- **मुख्यालय:** नई दिल्ली।
- **नोडल मंत्रालय:** इसे संस्कृति मंत्रालय के तहत चलाया और प्रशासित किया जाता है।

नंदलाल बोस (1882-1966)

- 3 दिसंबर, 1882 को बिहार के मुंगेर ज़िले में जन्मे नंदलाल बोस आधुनिक भारतीय कला के अग्रदूतों में से एक थे और प्रासंगिक आधुनिकतावाद (Contextual Modernism) से संबंधित थे।

- बोस **रवींद्रनाथ टैगोर** के भतीजे अवनिंद्रनाथ टैगोर जो पांच वर्ष के लिये वर्ष 1910 तक इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट के प्रमुख कलाकार और निर्माता रहे के साथ ही बड़े हुए।
- टैगोर परिवार के साथ जुड़ाव और अजंता के भित्ति चित्रों ने एक राष्ट्रवादी चेतना, शास्त्रीय और लोक कला के प्रति प्रतिबद्धता के साथ-साथ इसकी अंतर्निहित आध्यात्मिकता और प्रतीकवाद के आदर्शवाद को जागृत किया।
- उनकी क्लासिक कृतियों में **भारतीय पौराणिक कथाओं, महिलाओं और ग्रामीण जीवन के दृश्यों के चित्र शामिल** हैं।
- बोस ने अपने कार्यों में मुगल और राजस्थानी परंपराओं तथा चीनी-जापानी शैली और तकनीकी का प्रयोग किया।
- बोस वर्ष 1922 में रवींद्रनाथ टैगोर के **अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय शांति निकेतन में कला भवन (कला महाविद्यालय) के प्राचार्य** बने।
- जब भारतीय संविधान का मसौदा तैयार किया जा रहा था तब कांग्रेस ने बोस को के संविधान के पन्नों को चित्रित करने का कार्य सौंपा, साथ ही उनके शिष्य राममनोहर बोस ने संविधान की मूल पांडुलिपि को सुशोभित और सजाने का काम संभाला।
- 16 अप्रैल, 1966 को कलकत्ता में उनका निधन हो गया।
- आज कई आलोचक उनके चित्रों को भारत के सबसे महत्त्वपूर्ण आधुनिक चित्रों में से एक मानते हैं।
- वर्ष 1976 में **भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण** ने "नौ कलाकारों" के बीच कार्यों की घोषणा की तथा इनके कार्यो को **कलात्मक और सौंदर्य मूल्य के संबंध में कला के रूप में"** जाना जाता था।

YOJNA IAS

नारी शक्ति पुरस्कार 2021

- नारी शक्ति पुरस्कार, 2021 के लिये नामांकन की अंतिम तिथि 31 जनवरी, 2022 है।

नारी शक्ति पुरस्कार 2021 के बारे में:

- इस पुरस्कार को वर्ष 1999 में शुरू किया गया। यह भारत में महिलाओं के सम्मान में सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है।
- प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) पर भारत के राष्ट्रपति द्वारा नारी शक्ति पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं।
- नारी शक्ति पुरस्कार में 2 लाख रुपए की नकद पुरस्कार राशि और व्यक्तियों एवं संस्थानों को एक प्रमाण पत्र दिया जाता है।
- महिला एवं बाल विकास मंत्रालय व्यक्तियों/समूहों/गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ)/संस्थानों आदि के लिये इन राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कारों की घोषणा करता है। निम्नलिखित को पुरस्कार का वितरण किया जाता है:
- महिलाओं को निर्णय लेने की भूमिकाओं में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करने हेतु।
- पारंपरिक और गैर-पारंपरिक क्षेत्रों में महिलाओं के कौशल विकास हेतु।
- ग्रामीण महिलाओं को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिये।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल, कला, संस्कृति जैसे गैर-पारंपरिक क्षेत्रों में महिलाओं को स्थायी रूप से बढ़ावा देने के लिये।
- सुरक्षा, स्वास्थ्य और कल्याण, शिक्षा, जीवन कौशल, महिलाओं के सम्मान और सम्मान आदि की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य के लिये।

उद्देश्य:

- समाज में महिलाओं की स्थिति को मज़बूत करने के उद्देश्य से महिलाओं के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करना।
- यह **युवा भारतीयों को समाज और राष्ट्र के निर्माण में महिलाओं के योगदान** को समझने का अवसर भी प्रदान करेगा।
- यह वर्ष 2030 तक **सतत् विकास लक्ष्यों (एसडीजी)** को प्राप्त करने में भी मदद करेगा।
- **एसडीजी 5:** लैंगिक समानता हासिल करना और सभी महिलाओं एवं लड़कियों को सशक्त बनाना।

पात्रता:

- दिशा निर्देशों के अनुसार, कम-से-कम **25 वर्ष की आयु का कोई भी व्यक्ति और संबंधित क्षेत्र में कम-से-कम 5 वर्षों तक कार्य करने वाले संस्थान आवेदन** करने के पात्र हैं।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

- प्रत्येक वर्ष 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया जाता है। सर्वप्रथम वर्ष 1909 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया था। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वर्ष 1977 में इसे अधिकारिक मान्यता प्रदान की गई।
- पहली बार महिला दिवस वर्ष 1911 में ज़र्मनी के क्लारा ज़ेटकिन द्वारा मनाया गया था। प्रथम महिला दिवस की जड़ें मज़दूर आंदोलन से जुड़ी थीं।
- वर्ष 1913 में इसे 8 मार्च को मनाना निश्चित कर दिया गया था,जो वर्तमान तक जारी है।
- संयुक्त राष्ट्र द्वारा पहली बार वर्ष 1975 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया था।
- दिसंबर 1977 में महासभा के सदस्य राष्ट्रों द्वारा अपनी ऐतिहासिक और राष्ट्रीय परंपराओं के अनुसार, वर्ष के किसी भी दिन मनाए जाने वाला महिला अधिकार और अंतर्राष्ट्रीय शांति हेतु संयुक्त राष्ट्र दिवस घोषित करने का प्रस्ताव अपनाया गया।

भारतीय सेना दिवस

YOJNA IAS

- भारत में हर साल 15 जनवरी को जवानों और भारतीय सेना की याद में **सेना दिवस** (Army Day) मनाया जाता है।
- इस वर्ष भारत अपना **74वाँ सेना दिवस** मना रहा है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

- 15 जनवरी, 1949 को, **फील्ड मार्शल कोडंडेरा एम. करियप्पा** (Kodandera Madappa Cariappa), जो उस समय लेफ्टिनेंट जनरल थे, ने जनरल सर फ्रांसिस बुचर (जो उस पद को धारण करने वाले अंतिम ब्रिटिश व्यक्ति) से भारतीय सेना के पहले भारतीय कमांडर-इन-चीफ के रूप में पदभार ग्रहण किया, थे।
- के. एम. करियप्पा ने **'जय हिंद' का नारा** अपनाया **जिसका अर्थ है 'भारत की जीत'**। वह फील्ड मार्शल की पाँच सितारा रैंक रखने वाले केवल दो भारतीय सेना अधिकारियों में से एक हैं, दूसरे फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ हैं।

सेना दिवस:

- देश के उन **सैनिकों को सम्मानित करने के लिये प्रत्येक वर्ष सेना दिवस मनाया** जाता है, जिन्होंने निस्वार्थ सेवा और भाईचारे की सबसे बड़ी मिसाल कायम की है तथा जिनके लिये देश-प्रेम सबसे बढ़कर है।
- सेना दिवस के उपलक्ष्य में साल दिल्ली छावनी के **करियप्पा परेड ग्राउंड में परेड** का आयोजन किया जाता है।

भारतीय सेना:

- भारतीय सेना की उत्पत्ति ईस्ट इंडिया कंपनी की सेनाओं से हुई, जो बाद में 'ब्रिटिश भारतीय सेना' और अंततः स्वतंत्रता के बाद, भारतीय सेना बन गई।
- भारतीय सेना की **स्थापना लगभग 126 साल पहले अंग्रेज़ों ने 1 अप्रैल, 1895 को** की थी।
- भारतीय सेना को विश्व की चौथी सबसे सशक्त/मज़बूत सेना माना जाता है।

YOJNA IAS

मकर संक्रांति

- हाल ही में प्रधानमंत्री द्वारा फसल त्योहारों मकर संक्रांति, उत्तरायण, भोगी, माघ बिहू और पोंगल के अवसर पर देश भर में लोगों को बधाई दी गई।

- इन त्योहारों के माध्यम से देश भर के लाखों किसान अपनी कड़ी मेहनत और उद्यम का जश्न मनाते हैं।

मकर संक्रांति:

- मकर संक्रांति सूर्य के मकर राशि (मकर) में प्रवेश को दर्शाता है क्योंकि यह अपने खगोलीय पथ (Celestial Path) की परिक्रमा करता है।
- यह दिन गर्मियों की शुरुआत और हिंदुओं के लिये छह महीने की शुभ अवधि का प्रतीक है, जिसे उत्तरायण (सूर्य की उत्तर की ओर गति) के रूप में जाना जाता है।
- 'उत्तरायण' के एक आधिकारिक उत्सव के रूप में गुजरात सरकार द्वारा वर्ष 1989 से अंतर्राष्ट्रीय पतंग महोत्सव का आयोजन किया जाता है।
- इस दिन से जुड़े उत्सवों को देश के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है:
- उत्तर भारतीय हिंदुओं और सिखों द्वारा लोहड़ी के रूप में।
- मध्य भारत में संकरात।
- असमिया हिंदुओं द्वारा भोगली बिहू।
- तमिल और अन्य दक्षिण भारतीय हिंदुओं द्वारा पोंगल के रूप में।

बीहू:

- यह तब मनाया जाता है जब असम में वार्षिक फसल होती है। असमिया नए वर्ष की शुरुआत को चिह्नित करने हेतु लोग रोंगाली/माघ बिहू मनाते हैं।
- ऐसा माना जाता है कि इस त्योहार की शुरुआत उस समय से हुई थी जब घाटी के लोगों ने ज़मीन जोतना शुरू कर दिया था। बिहू त्योहार को ब्रह्मपुत्र नदी जितना पुराना माना जाता है।

पोंगल:

- पोंगल शब्द का अर्थ है 'उफान' (Overflow) या विप्लव (Boiling Over)।

- इसे थाई पोंगल के रूप में भी जाना जाता है, यह चार दिवसीय उत्सव तमिल कैलेंडर के अनुसार 'थाई' माह में मनाया जाता है, जब धान आदि फसलों की कटाई की जाती है और लोग ईश्वर तथा भूमि की दानशीलता के प्रति आभार प्रकट करते हैं।
- इस उत्सव के दौरान तमिल लोग चावल के आटे से अपने घरों के आगे कोलम नामक पारंपरिक रंगोली बनाते हैं।

तिरुवल्लुवर दिवस

- प्रधानमंत्री ने तमिल कवि और दार्शनिक तिरुवल्लुवर को उनकी जयंती 'तिरुवल्लुवर दिवस' (Thiruvalluvar Day) के अवसर पर याद किया।

- वर्तमान समय में इसे आमतौर पर तमिलनाडु में 15 या 16 जनवरी को मनाया जाता है और यह पोंगल समारोह का एक हिस्सा है।

परिचय:

- तिरुवल्लुवर जिन्हें वल्लुवर भी कहा जाता है, एक तमिल कवि-संत थे।
- धार्मिक पहचान के कारण उनकी कालावधि के संबंध में विरोधाभास है सामान्यतः उन्हें तीसरी-चौथी या आठवीं-नौवीं शताब्दी का माना जाता है।
- सामान्यतः उन्हें जैन धर्म से संबंधित माना जाता है। हालाँकि हिंदुओं का दावा है कि तिरुवल्लुवर हिंदू धर्म से संबंधित थे।
- द्रविड़ समूहों (Dravidian Groups) ने उन्हें एक संत माना क्योंकि वे जाति व्यवस्था में विश्वास नहीं रखते थे।
- उनके द्वारा संगम साहित्य में तिरुक्कुरल या 'कुराल' (Tirukkural or 'Kural') की रचना की गई थी।

तिरुक्कुरल में 10 कविताएँ व 133 खंड शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक को तीन पुस्तकों में विभाजित किया गया है:

- अराम- Aram (सदगुण- Virtue)।
- पोरुल- Porul (सरकार और समाज)।
- काामम- Kamam (प्रेम)।

तिरुक्कुरल की तुलना विश्व के प्रमुख धर्मों की महान पुस्तकों से की गई है।

संगम साहित्य

- 'संगम' शब्द संस्कृत शब्द संघ का तमिल रूप पांड्य राजाओं के संरक्षण में तीन अलग-अलग कालों में अलग-अलग जगहों पर फली-फूली।
- इसे तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी ई. के दौरान संकलित किया गया था और प्रेम एवं युद्ध के विषयों के आसपास काव्य प्रारूप में रचा गया था।
- तमिल किंवदंतियों के अनुसार, प्राचीन दक्षिण भारत में तीन संगमों (तमिल कवियों का समागम) का आयोजन किया गया था, जिसे मुच्चंगम (Muchchangam) कहा जाता था।
- माना जाता है कि प्रथम संगम मदुरै में आयोजित किया गया था। इस संगम में देवता और महान संत शामिल थे। इस संगम का कोई साहित्यिक ग्रंथ उपलब्ध नहीं है।
- दूसरा संगम ‘कपाटपुरम्’ में आयोजित किया गया था, इस संगम का एकमात्र तमिल व्याकरण ग्रंथ ‘तोलकाप्पियम्’ ही उपलब्ध है।
- तीसरा संगम भी मदुरै में हुआ था। इस संगम के अधिकांश ग्रंथ नष्ट हो गए थे। इनमें से कुछ सामग्री समूह ग्रंथों या महाकाव्यों के रूप में उपलब्ध है।
- संगम साहित्य जो तीसरे संगम से काफी हद तक समेकित था, ईसाई युग की शुरुआत के आसपास लोगों के जीवन की स्थितियों पर जानकारी देता है।
- यह सार्वजनिक और सामाजिक गतिविधियों जैसे- सरकार, युद्ध दान, व्यापार, पूजा, कृषि आदि धर्मनिरपेक्ष मामलों से संबंधित है।
- संगम साहित्य में प्राचीनतम **तमिल रचनाएँ (जैसे तोलकाप्पियम), दस कविताएँ (पट्टुपट्टू), आठ संकलन (एट्टुटोगई) और अठारह लघु रचनाएँ (पदीनेकिलकनक्कु)** तथा तीन महाकाव्य शामिल हैं।

टोंगा

- हाल ही में टोंगा के दक्षिणी प्रशांत द्वीप में एक ज्वालामुखी विस्फोट हुआ है, जिससे प्रशांत महासागर के चारों ओर सुनामी लहरें उठी रही हैं।

- टोंगा द्वीप समूह '**रिंग ऑफ फायर**' में मौजूद है, जो कि प्रशांत महासागर के बेसिन को घेरने वाली ऊँची ज्वालामुखी और भूकंपीय गतिविधि की परिधि है।

परिचय

- यह एक अंडर-सी ज्वालामुखी विस्फोट है, जिसमें दो छोटे निर्जन द्वीप, हुंगा-हापाई और हुंगा-टोंगा शामिल हैं।
- पिछले कुछ दशकों में हुंगा-टोंगा-हुंगा-हापाई में नियमित रूप से ज्वालामुखी विस्फोट हो रहा है।
- वर्ष 2009 और वर्ष 2014-15 की घटनाओं के दौरान भी मैग्मा और भाप के गर्म जेट के साथ विस्फोट हुए थे। लेकिन हालिया घटनाओं (जनवरी 2022) की तुलना में ये विस्फोट काफी छोटे थे।
- इस बार का विस्फोट उन बड़े विस्फोटों में से एक है, जो प्रत्येक हज़ार वर्ष में रिकॉर्ड किये जाते हैं।
- इसके अत्यधिक विस्फोटक होने का एक कारण 'फ्यूल-कूलेंट इंटरेक्शन' है।

प्रभाव:

- विशाल ज्वालामुखी विस्फोट कभी-कभी अस्थायी वैश्विक शीतलन का कारण बन सकते हैं क्योंकि सल्फर डाइऑक्साइड को समताप मंडल में पंप किया जाता है। लेकिन टोंगा विस्फोट के मामले में प्रारंभिक उपग्रह माप से संकेत मिलता है कि सल्फर डाइऑक्साइड की मात्रा का केवल 0.01 सेल्सियस वैश्विक औसत शीतलन पर एक छोटा प्रभाव डालेगा।
- विस्फोट ने वायुमंडलीय दबाव को बदल दिया जिसने संयुक्त राज्य अमेरिका में सिएटल में कोहरे को दूर करने में कुछ समय के लिये मदद की होगी।
- इन लहरों ने प्रशांत को पार किया और इनकी वजह से पेरू में दो लोग डूब गए तथा न्यूज़ीलैंड एवं सांताक्रूज़, कैलिफोर्निया में मामूली क्षति हुई।

- यूएस जियोलॉजिकल सर्वे ने अनुमान लगाया है कि विस्फोट 5.8 तीव्रता के **भूकंप** के बराबर था।

ज्वालामुखी

- ज्वालामुखी पृथ्वी की सतह में एक उद्‌घाटन या टूटन है जो मैग्मा के रूप में गर्म तरल और अर्द्ध-तरल चट्टानों, ज्वालामुखीय राख और गैसों के रूप में बहार निकलता है।
- ज्वालामुखीय हॉटस्पॉट वे स्थान होते हैं जहांँ पृथ्वी की टेक्टोनिक प्लेट आपस में मिलती हैं।
- ज्वालामुखी विस्फोट तब होता है जब ज्वालामुखी से लावा और गैस कभी-कभी विस्फोटक रूप में बहार निकलती है।

समुद्र के नीचे ज्वालामुखी:

- समुद्र के नीचे ज्वालामुखी विस्फोट एक ऐसे ज्वालामुखी में होता है जो समुद्र की सतह के नीचे स्थित होता है। समुद्र के भीतर अनुमानित एक मिलियन ज्वालामुखी हैं और उनमें से अधिकांश टेक्टोनिक प्लेटों के पास स्थित हैं।
- इन छिद्रों से लावा के अलावा राख भी निकलती है। ये समुद्र के तल पर जमा हो जाते हैं और समुद्री टीले का निर्माण करते हैं - पानी के नीचे स्थित पर्वत जो समुद्र के तल पर निर्मित होते हैं लेकिन पानी की सतह तक नहीं पहुंचते हैं।

ईंधन-शीतलक इंटरैक्शन

- यदि मैग्मा समुद्र के पानी में धीरे-धीरे ऊपर उठता है, तो लगभग 1200 डिग्री सेल्सियस के तापमान पर भी मैग्मा तथा पानी के बीच भाप की एक पतली परत बन जाती है। यह मैग्मा की बाहरी सतह को ठंडा करने के लिये इन्सुलेशन की एक परत प्रदान करता है। लेकिन यह प्रक्रिया तब काम नहीं करती जब तक कि ज्वालामुखी गैस से भरी जमीन से मैग्मा का विस्फोट न हो।
- जब मैग्मा तेज़ी से पानी में प्रवेश करता है तो भाप की परत जल्द ही बाधित हो जाती है, जिससे गर्म मैग्मा ठंडे पानी के सीधे संपर्क में आ जाता है।

- यह एक रासायनिक विस्फोटों के समान है।
- अत्यधिक हिंसक विस्फोट मैग्मा को अलग कर देता हैं।
- एक श्रृंखला प्रतिक्रिया शुरू होती है, नए मैग्मा के टुकड़े पानी के लिये ताज़ा गर्म आंतरिक सतहों को उज़ागर करते हैं और विस्फोट अंततः ज्वालामुखी कणों को बाहर निकालते हैं तथा सुपरसोनिक गति के साथ विस्फोट करते हैं।

PASSEX अभ्यास

- हाल ही में भारत का आईएनएस 'कोच्चि' और रूस के जहाज़ 'अंतर्राष्ट्रीय पैसेज अभ्यास' (PASSEX) में शामिल हुए।

- पूर्व-नियोजित समुद्री अभ्यासों के विपरीत 'पैसेज सैन्य अभ्यास' अवसर के अनुसार कभी भी आयोजित किया जा सकता है।
- इससे पूर्व भारतीय नौसेना के जहाज़ों ने **अमेरिकी नौसेना के साथ भी 'PASSEX'** का आयोजन किया था।

भारत के लिये रूस का महत्व:

हिंद महासागर क्षेत्र में:

- **हिंद महासागर रिम एसोसिएशन** (IORA) के एक संवाद भागीदार के रूप में रूस के शामिल होने से हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में संतुलन बनाने और वैज्ञानिक एवं अनुसंधान प्रयासों पर एक संभावित समुद्री सुरक्षा संरचना सहित भारत के साथ सहयोग के लिये कई सारे अवसर खुल गए हैं।

आर्कटिक क्षेत्र में:

- आर्कटिक क्षेत्र में भारत के वैज्ञानिक, पर्यावरण, वाणिज्यिक एवं रणनीतिक हित हैं और रूसी **आर्कटिक** संभावित रूप से भारत के ऊर्जा सुरक्षा उद्देश्यों को संबोधित कर सकता है।

हाइड्रोकार्बन:

- रूस के पास दुनिया में सबसे बड़ा प्राकृतिक गैस भंडार है, जो वर्तमान उत्पादन दरों के तहत लगभग 80 वर्षों तक के लिये पर्याप्त है।

सामरिक खनिज:

- रूसी आर्कटिक में कोबाल्ट, तांबा, हीरा, सोना, लोहा, निकल, प्लैटिनम, उच्च मूल्य वाले दुर्लभ तत्त्व, टाइटेनियम, वैनेडियम और ज़िरकोनियम के विशाल भंडार भी हैं।
- आर्कटिक में रूस के निकल तथा कोबाल्ट उत्पादन का 90%, तांबे का 60% और प्लैटिनम धातुओं का 96% से अधिक का उत्पादन होता है।
- भारतीय दुर्लभ भू-भंडार हल्के अंशों में अधिक समृद्ध हैं और भारी मात्रा में कम हैं।
- सामरिक उद्योगों में उपयोग किये जाने वाले अधिकांश दुर्लभ भू-उत्पाद जैसे- पवन टरबाइन तथा इलेक्ट्रिक वाहनों सहित विभिन्न स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के लिये रक्षा, फाइबर ऑप्टिक संचार, अंतरिक्ष और परमाणु ऊर्जा भी महत्त्वपूर्ण हैं।
- इसलिये रूसी आर्कटिक में **दुर्लभ पृथ्वी और सामरिक खनिजों में भारत की महत्त्वपूर्ण कमियों को कम** करने की क्षमता है।

उत्तरी समुद्री मार्ग:

- भारतीय बंदरगाहों को **उत्तरी समुद्री मार्ग या एनएसआर** से कोई लाभ नहीं होता है और यह रॉटरडैम के लिये वर्तमान मार्ग से अधिक लंबा है।
- हालांकि NSA में सहयोग के अन्य रास्ते भी हैं।
- रूस ने अन्य बातों के साथ-साथ NSA के जल में साल भर, सुरक्षित, अबाधित और लागत प्रभावी नौवहन सुनिश्चित करने की घोषणा की है।
- भारत ने रूस के साथ साझेदारी करने की अपनी इच्छा का संकेत देते हुए कहा है कि "भारत और रूस भी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार व वाणिज्य हेतु NSA को खोलने में भागीदार होंगे"। इसके जवाब में राष्ट्रपति पुतिन ने कहा है कि रूस NSA में भारत के हितों का स्वागत करता है।

सुदूर पूर्व में रूस:

- रूस सुदूर पूर्व या RFE में प्राकृतिक संसाधनों में समृद्ध है।
- देश के सभी कोयला भंडारों और हाइड्रो-इंजीनियरिंग संसाधनों का लगभग एक तिहाई भाग इस क्षेत्र में उपलब्ध है। इस क्षेत्र के वन रूस के कुल वन क्षेत्र का लगभग 30% हैं।
- NSR सहित RFE के विकास में भारत के सहयोग का दोनों देशों ने समर्थन किया है।
- वर्ष 2019 में **ईस्टर्न इकोनॉमिक फोरम** (Eastern Economic Forum- EEF) को संबोधित करते हुए भारत ने RFE के विकास में और योगदान देने हेतु 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर की लाइन ऑफ क्रेडिट की घोषणा की थी।

भारत और रूस के अन्य अभ्यास:

- **अभ्यास TSENTR 2019** (बहुपक्षीय सैन्य अभ्यास)।
- **इंद्र अभ्यास - संयुक्त त्रि-सेवा (सेना, नौसेना, वायु सेना) अभ्यास।**
- ZAPAD 2021 (बहुपक्षीय सैन्य अभ्यास)।

INS **कोच्चि**

- यह कोलकाता-श्रेणी के स्टील्थ गाइडेड-मिसाइल विध्वंसक का स्वदेशी रूप से डिज़ाइन किया गया दूसरा जहाज़ है, जिसे भारतीय नौसेना के लिये प्रोजेक्ट 15A के कोड नाम के तहत बनाया गया था।
- इसका निर्माण मुंबई में मझगाँव डॉक लिमिटेड (एमडीएल) द्वारा किया गया था और बाद में व्यापक समुद्री परीक्षणों से गुज़रने के बाद वर्ष 2015 में इसे भारतीय नौसेना सेवाओं में शामिल किया गया था। .
- इससे पहले इसने कई अन्य नौसैनिक सेवाओं में भाग लिया, जिनमें शामिल हैं:
- **जायद तलवार:** यह भारतीय और संयुक्त अरब अमीरात नौसेना के बीच एक द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास है।
- **'अल-मोहद अल-हिंदी'**: भारत और सऊदी अरब ने अपना पहला नौसेना संयुक्त अभ्यास शुरू किया।

- **भारत- यूएस पासेक्स**

विशेष विवाह अधिनियम

- हाल ही में देश में अंतर-धार्मिक विवाहों को नियंत्रित करने वाले कानून, विशेष विवाह अधिनियम (SMA), 1954 को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी गई।
- वर्ष 2021 में इसके कई प्रावधानों को रद्द करने के लिये याचिकाएँ दायर की गईं।

विशेष विवाह अधिनियम (SMA), 1954:

- विशेष विवाह अधिनियम भारत में अंतर-धार्मिक एवं अंतर्जातीय विवाह को पंजीकृत करने एवं मान्यता प्रदान करने हेतु बनाया गया है।
- यह एक नागरिक अनुबंध के माध्यम से दो व्यक्तियों को अपनी शादी विधिपूर्वक करने की अनुमति देता है।
- अधिनियम के तहत किसी धार्मिक औपचारिकता के निर्वहन की आवश्यकता नहीं होती।
- इस अधिनियम में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, सिख, जैन और बौद्ध विवाह शामिल हैं।
- यह अधिनियम न केवल विभिन्न जातियों और धर्मों के भारतीय नागरिकों पर बल्कि विदेशों में रहने वाले भारतीय नागरिकों पर भी लागू होता है।

वर्तमान याचिका के बारे में:

- SMA की धारा 5 में इस कानून के तहत शादी करने वाले व्यक्ति को इच्छित विवाह की सूचना देने की आवश्यकता होती है।
- धारा 6(2) के मुताबिक, इसे विवाह अधिकारी के कार्यालय में एक विशिष्ट स्थान पर चिपका दिया जाना चाहिये।

- धारा 7(1) किसी भी व्यक्ति को नोटिस के प्रकाशन के 30 दिनों के भीतर विवाह पर आपत्ति करने की अनुमति देती है, ऐसा न करने पर धारा 7(2) के तहत विवाह संपन्न किया जा सकता है।
- व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्रभावित करने वाले इन प्रावधानों के कारण कई अंतर-धार्मिक जोड़ों ने अधिनियम की धारा 6 और 7 को न्यायालय के समक्ष चुनौती दी थी।

अंतर-धार्मिक विवाह

- अंतर-धार्मिक विवाह का आशय अलग-अलग धार्मिक आस्थाओं वाले दो व्यक्तियों के बीच वैवाहिक संबंध से है।
- एक अलग धर्म में शादी करना किसी वयस्क के लिये अपनों व्यक्तिगत पसंद का मामला है।

अंतर-धार्मिक विवाह से संबंधित मुद्दे:

- माना जाता है कि अंतर-र्धार्मिक विवाह के तहत पति-पत्नी (ज़्यादातर महिलाएँ) में से किसी एक का जबरन धर्मांतरण होता है।
- मुस्लिम पर्सनल लॉ के अनुसार, गैर-मुस्लिम से शादी करने के लिये धर्म परिवर्तन ही एकमात्र तरीका है।
- हिंदू धर्म केवल एक विवाह की अनुमति देता है और जो लोग दूसरी शादी करना चाहते हैं वे दूसरा रास्ता अपनाते हैं।
- ऐसे विवाहों से पैदा हुए बच्चों के जाति निर्धारण के संबंध में कोई प्रावधान नहीं है।
- विशेष विवाह अधिनियम, 1954 समाज के पिछड़ेपन के अनुकूल नहीं है।
- उच्च न्यायालय द्वारा अंतर-र्धार्मिक विवाह को रद्द करने के संदर्भ में अनुच्छेद 226 की वैधता पर बहस चल रही है।
- **अनुच्छेद 226:** रिट जारी करने की उच्च न्यायालयों की शक्ति।

अंतर-धार्मिक विवाहों से संबंधित कानूनों पर विचार करते समक्ष चुनौतियाँ:

मौलिक अधिकारों के विरुद्ध:

- किसी व्यक्ति को विवाह के चुनाव में कानून का हस्तक्षेप उसके मौजूदा मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करता है जैसे:
- समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14)।
- स्वतंत्रता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद 19)।
- धर्म की स्वतंत्रता और जीवन का अधिकार (अनुच्छेद 25 व अनुच्छेद 21)।

धर्मनिरपेक्षता के विरुद्ध:

- भारतीय संविधान में धर्मनिरपेक्षता को प्रमुख सिद्धांतों में शामिल किया गया है।
- भारतीय संविधान का अनुच्छेद 25 अपनी पसंद के किसी भी धर्म का पालन करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है।
- इसलिये भारत में अंतर-धार्मिक विवाहों की अनुमति है क्योंकि संविधान किसी भी व्यक्ति को अन्य धर्म को अपनाने का अधिकार प्रदान करता है।

सर्वोच्च न्यायालय के विभिन्न निर्णयों के साथ भिन्नता:

- सर्वोच्च न्यायालय ने शफीन जहान बनाम अशोक केएम (2018) मामले में अनुच्छेद 21 के एक भाग के रूप में अपनी पसंद के व्यक्ति से विवाह करने के अधिकार को बरकरार रखा है।
- सर्वोच्च न्यायालय के अनुसार, संविधान प्रत्येक व्यक्ति की जीवन-शैली या विश्वास का पालन करने की क्षमता को सुरक्षित करता है जिसका वह पालन करना चाहता है।
- इसलिये अपनी पसंद के व्यक्ति से शादी करने का अधिकार संविधान के अनुच्छेद 21 का अभिन्न अंग है।
- इसके अलावा सर्वोच्च न्यायालय में **के.एस. पुट्टस्वामी बनाम यूओआई (2017)** के फैसले ने **"पारिवारिक जीवन के चुनाव के अधिकार"** को मौलिक अधिकार के रूप में माना है।
- **पितृसत्तात्मक:** इससे पता चलता है कि कानून की जड़ें पितृसत्तात्मक हैं, जिसमें महिलाओं को माता-पिता एवं सामुदायिक नियंत्रण में रखा जाता है और यहाँ तक की जीवन के निर्णय लेने के अधिकार से वंचित किया जाता है, अगर वे निर्णय उनके अभिभावकों को स्वीकार्य न हो।

आगे की राह

- किसी भी कानून को शामिल करने से बचने के लिये मानसिक और सामाजिक स्तर पर विशेष विवाह अधिनियम, 1954 की स्वीकृति होनी चाहिये।
- अधिकारों का शोषण नहीं होना चाहिये, केवल विवाह हेतु धर्म परिवर्तन करना बिल्कुल भी बुद्धिमानी नहीं है।

रविदासिया समुदाय

- हाल ही में भारत के चुनाव आयोग (Election Commission of India-ECI) ने पंजाब में रविदासिया समुदाय (Ravidassia community) के महत्त्व के कारण विधानसभा चुनाव के मतदान स्थगित कर दिया है।
- राज्य सरकार और राजनीतिक दलों ने चिंता जताई कि है 16 फरवरी को गुरु रविदास की जयंती मनाने के कारण कई भक्त वाराणसी (एक स्मारक मंदिर में) में होंगे जिस कारण वे मतदान में शामिल होने से वंचित हो सकते हैं।
- हिंदू चंद्र कैलेंडर के अनुसार, माघ महीने में पूर्णिमा के दिन गुरु रविदास की जयंती मनाई जाती है।

परिचय:

- रविदासिया दलित समुदाय के लोग हैं, जिनमें से अधिकांश लगभग 12 लाख की आबादी दोआब क्षेत्र में रहती है।
- डेरा सचखंड बल्लन जो कि दुनिया भर में 20 लाख अनुयायियों के साथ उनका सबसे बड़ा डेरा है, बाबा संत पीपल दास द्वारा 20वीं शताब्दी की शुरुआत में स्थापित किया गया था।

- पूर्व में सिख धर्म से निकटता से जुड़े होने के बावजूद इस डेरा ने वर्ष 2010 में दशकों पुराने संबंधों को तोड़ दिया और घोषणा की कि वे रविदासिया धर्म का पालन करेंगे।
- यह घोषणा वाराणसी में रविदास जयंती के अवसर पर की गई।
- वर्ष 2010 से डेरा सचखंड बल्लन ने रविदासिया मंदिरों और गुरुद्वारों में गुरु ग्रंथ साहिब को अपने स्वयं के ग्रंथ, अमृतबनी के साथ प्रतिस्थापित कर दिया, जिसमें गुरु रविदास के 200 भजन शामिल थे।

गुरु रविदास:

- गुरु रविदास 15वीं और 16वीं शताब्दी के भक्ति आन्दोलन के एक रहस्यवादी कवि संत थे और उन्होंने रविदासिया धर्म की स्थापना की।
- ऐसा माना जाता है कि उनका जन्म वाराणसी में एक मोची के परिवार में हुआ था।
- एक ईश्वर में विश्वास और निष्पक्ष धार्मिक कविताओं की रचना के कारण उन्हें ख्याति प्राप्त हुई।
- उन्होंने अपना पूरा **जीवन जाति व्यवस्था के उन्मूलन के लिये समर्पित** कर दिया और **ब्राह्मणवादी समाज की धारणा की खुले तौर पर निंदा** की।
- उनके भक्ति गीतों ने भक्ति आंदोलन पर त्वरित प्रभाव डाला। उनकी लगभग 41 कविताओं को सिखों के धार्मिक पाठ **'गुरु ग्रंथ साहिब'** में भी शामिल किया गया।

YOJNA IAS

दिल्ली की पहली इलेक्ट्रिक बस

- राजधानी दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने हाल ही में प्रदेश की पहली डीटीसी इलेक्ट्रिक बस की शुरुआत की है।

- इस संबंध में जारी सूचना के मुताबिक, दिल्ली परिवहन निगम (DTC) इस वर्ष अप्रैल माह तक तकरीबन 300 और नई इलेक्ट्रिक बसें खरीदेगा।

- हालाँकि दिल्ली सरकार का लक्ष्य राजधानी में कुल 2000 इलेक्ट्रिक बसों की शुरुआत करना है, जो कि प्रदेश में प्रदूषण का मुकाबला करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम हो सकता है।

- इलेक्ट्रिक बसें न्यूनतम 120 किलोमीटर की दूरी तय करेंगी और प्रदेश में कुछ निश्चित स्थानों पर चार्जिंग पॉइंट की भी व्यवस्था की जाएगी।

- ध्यातव्य है कि इससे पूर्व बीते वर्ष दिसंबर माह में कर्नाटक ने सार्वजनिक परिवहन हेतु अपनी पहली इलेक्ट्रिक बस लॉन्च की थी।

- कर्नाटक राज्य की सड़कों पर इस समय 25 इलेक्ट्रिक बसें चल रही हैं। इन बसों में रीयल टाइम पैसेंजर इंफॉर्मेशन सिस्टम (PIS), आपात स्थिति हेतु पैनिक बटन, ऑटोमेटिक बस व्हीकल लोकेशन सिस्टम, सीसीटीवी कैमरे, पब्लिक एड्रेस सिस्टम, स्टॉप रिक्वेस्ट बटन आदि जैसी विशेषताएँ शामिल हैं।

‘राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस पुरस्कार’

- हाल ही में नगालैंड के ‘सोम’ ज़िला प्रशासन को '**कोविड-19** के प्रबंधन में आईसीटी के उपयोग' संबंधी श्रेणी के तहत प्रतिष्ठित ‘राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस पुरस्कार- 2020-21’ प्रदान किया गया है।

- इस संबंध में जारी अधिसूचना के मुताबिक, ‘सोम’ ज़िला प्रशासन ने 'प्रशासन की सहायता में प्रौद्योगिकी' नामक पहल के तहत कोविड-19 महामारी के प्रबंधन और आम जनमानस की कठिनाई को कम करने

हेतु व्यापक स्तर पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग जैसी विभिन्न उभरती तकनीकों का उपयोग किया।

- इस व्यवस्था के तहत विभिन्न योजनाओं और पहलों के निर्माण व कार्यान्वयन के लिये क्षेत्रीय स्तर पर कई निजी कंपनियों एवं गैर-सरकारी संगठनों को शामिल किया गया।
- ज्ञात हो कि यह पुरस्कार हैदराबाद में आयोजित **ई-गवर्नेंस पर 24वें राष्ट्रीय सम्मेलन** में प्रदान किया गया।
- 'राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस पुरस्कार' प्रतिवर्ष ई-गवर्नेंस पहल के कार्यान्वयन में उत्कृष्टता को पहचानने और बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रदान किये जाते हैं।
- इस पुरस्कार में एक ट्रॉफी, एक प्रमाण पत्र और 1 लाख रुपए का नकद पुरस्कार शामिल है।

'देश के मेंटर' कार्यक्रम

- हाल ही में राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (National Commission for Protection of Child Rights- NCPCR) ने सुझाव दिया कि दिल्ली सरकार अपने प्रमुख 'देश के मेंटर' कार्यक्रम को तब तक के लिये स्थगित कर दे, जब तक कि बच्चों की सुरक्षा से संबंधित सभी खामियों को दूर नहीं किया जाता।

राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग:

- NCPCR का गठन मार्च 2007 में 'कमीशंस फॉर प्रोटेक्शन ऑफ चाइल्ड राइट्स' (Commissions for Protection of Child Rights-

CPCR) अधिनियम, 2005 के तहत एक वैधानिक निकाय के रूप में किया गया है।

- यह महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है।
- आयोग का अधिदेश (Mandate) यह सुनिश्चित करता है कि सभी कानून, नीतियाँ, कार्यक्रम और प्रशासनिक तंत्र भारत के संविधान में निहित बाल अधिकार के प्रावधानों के साथ-साथ संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन के बाल अधिकारों के अनुरूप भी हों।
- यह शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 (Right to Education Act, 2009) के तहत एक बच्चे के लिये मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा के अधिकार से संबंधित शिकायतों की जाँच करता है।
- यह लैंगिक अपराधों से बच्चों के संरक्षण अधिनियम, 2012 [Protection of Children from Sexual Offences (POCSO) Act, 2012] के कार्यान्वयन की निगरानी करता है।

देश के मेंटर कार्यक्रम के बारे में:

- इसे अक्तूबर 2021 में लॉन्च किया गया था, जिसका उद्देश्य नौवीं से बारहवीं कक्षा के छात्रों को स्वैच्छिक सलाहकारों (Voluntary Mentors) से जोड़ना था।
- दिल्ली टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी की एक टीम द्वारा बनाए गए एप के माध्यम से 18 से 35 वर्ष की आयु के लोग मेंटर बनने हेतु साइन अप कर सकते हैं, जो कि आपसी हितों के आधार पर छात्रों से जुड़े रहेंगे।
- मेंटरशिप में कम-से-कम दो महीने के लिये नियमित फोन कॉल शामिल हैं, जिसे वैकल्पिक रूप से अगले चार महीनों तक चलाया जा सकता है।
- इस विचार का उद्देश्य युवा मेंटर्स को उच्च शिक्षा और कॅरियर विकल्पों जैसे मामलों में छात्रों को मार्गदर्शन के लिये प्रेरित करना है, ताकि वे बेहतर ढंग से उच्च शिक्षा प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर सकें और दबाव मुक्त हो सकें।
- अब तक 44,000 लोगों ने मेंटर के रूप में साइन अप किया है, जो कि 1.76 लाख बच्चों के साथ काम कर रहे हैं।

NCPCR द्वारा उठाई गई चिंताएँ:

- बच्चों को केवल समान लिंग के मेंटर के साथ जोड़ना ही दुर्व्यवहार से उनकी रक्षा करने का उपाय नहीं है।
- मेंटर के **पुलिस सत्यापन का अभाव।**
- साइकोमेट्रिक टेस्ट किसी भी बच्चे के लिये संभावित खतरे के संदर्भ में **किसी व्यक्ति का पूर्ण प्रमाण मूल्यांकन नहीं** है।
- बातचीत को फोन कॉल तक सीमित करना भी बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं करता है क्योंकि **"बच्चे से संबंधित अपराध फोन कॉल के माध्यम से भी शुरू किये जा सकते हैं।"**
- बच्चों को ऐसी स्थितियों से बचाने की ज़िम्मेदारी और जवाबदेही विभाग की होती है। किसी भी अप्रिय घटना की स्थिति में माता-पिता की सहमति का उपयोग के रूप में नहीं किया जा सकता है।

एस. सोमनाथ

- हाल ही में एक प्रख्यात रॉकेट वैज्ञानिक एस सोमनाथ को भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) के अध्यक्ष और अंतरिक्ष सचिव के रूप में नियुक्त किया गया है।

डॉ. सोमनाथ का प्रमुख योगदान

- उन्होंने पोलर सैटेलाइट लांच व्हीकल (PSLV) और **जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल Mk-III (GSLV Mk-III)** के विकास में प्रमुख भूमिका निभाई है।
- वह वर्ष 2003 में GSLV Mk-III परियोजना में शामिल हुए और वर्ष 2010 से 2014 तक परियोजना निदेशक के रूप में कार्य किया।
- वह प्रमोचन वाहनों के सिस्टम इंजीनियरिंग के क्षेत्र में विशेषज्ञ हैं।
- बाद में उन्होंने **जीएसएलवी के लिये स्वदेशी क्रायोजेनिक चरणों** के विकास में योगदान दिया।

इसरो:

- यह भारत की अग्रणी अंतरिक्ष अन्वेषण एजेंसी है, जिसका मुख्यालय बंगलूरू में है।
- इसरो का गठन वर्ष 1969 में ग्रहों की खोज और अंतरिक्ष विज्ञान अनुसंधान को आगे बढ़ाते हुए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के विकास और दोहन की दृष्टि से किया गया था।
- इसरो ने अपने पूर्ववर्ती **INCOSPAR (अंतरिक्ष अनुसंधान के लिये भारतीय राष्ट्रीय समिति)** की जगह ली, जिसकी **स्थापना वर्ष 1962** में भारत के पहले प्रधानमंत्री पं जवाहरलाल नेहरू और वैज्ञानिक विक्रम साराभाई को भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के संस्थापकों में से एक माना जाता है।

इसरो की उपलब्धियाँ:

- **पहला भारतीय उपग्रह आर्यभट्ट** इसरो द्वारा बनाया गया था जो **19 अप्रैल 1975** को सोवियत संघ की मदद से लॉन्च किया गया था।
- वर्ष 1980 ने रोहिणी के प्रक्षेपण को चिह्नित किया, जो कि पहला उपग्रह था जिसे **एसएलवी -3** द्वारा सफलतापूर्वक कक्षा में भेजा गया, यह एक भारत निर्मित प्रक्षेपण यान था।
- इसके बाद इसरो द्वारा दो अन्य रॉकेट विकसित किये गए: **पीएसएलवी (पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल) उपग्रहों को ध्रुवीय कक्षाओं** में रखने के लिये **और जीएसएलवी (जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल) उपग्रहों को भूस्थिर** कक्षाओं में रखने के लिये।
- दोनों रॉकेटों ने भारत के साथ-साथ अन्य देशों के लिये कई पृथ्वी अवलोकन और संचार उपग्रहों को सफलतापूर्वक लॉन्च किया है।
- **आईआरएनएसएस और गगन** जैसे स्वदेशी उपग्रह नेविगेशन सिस्टम भी तैनात किये गए हैं।
- **क्षेत्रीय नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम** को हिंद महासागर के पानी में जहाजों के नेविगेशन में सहायता के लिये सटीक स्थिति सूचना सेवा प्रदान करने हेतु डिज़ाइन किया गया है।
- गगन (**GAGAN**) भारत का पहला उपग्रह आधारित ग्लोबल पोज़ीशनिंग सिस्टम (Global Positioning System) है जो इसरो के जीसैट उपग्रहों पर निर्भर करता है।
- जनवरी 2014 में ISRO ने GSAT-14 उपग्रह के GSLV-D5 प्रक्षेपण के लिये स्वदेशी रूप से निर्मित क्रायोजेनिक इंजन का उपयोग किया,

जिससे यह क्रायोजेनिक तकनीक विकसित करने वाले दुनिया के केवल छह देशों में शामिल हो गया।

- इसरो की कुछ उल्लेखनीय अंतरिक्ष खोजों में चंद्रयान-1 चंद्र ऑर्बिटर, मार्स ऑर्बिटर मिशन (मंगलयान -1) और एस्ट्रोसैट अंतरिक्ष वेधशाला शामिल हैं।
- मार्स ऑर्बिटर मिशन की सफलता ने भारत को मंगल की कक्षा में पहुँचने वाला दुनिया का चौथा देश बना दिया।
- भारत ने 22 जुलाई 2019 को चंद्रयान-1 के बाद अपना दूसरा चंद्र अन्वेषण मिशन चंद्रयान-2 लॉन्च किया।

2021 में इसरो की प्रमुख उपलब्धियां:

अमेजोनिया- 1

- गगन की 53वीं उड़ान भारत की पहली उपग्रह-आधारित वैश्विक स्तर की प्रणाली है जो इसरो के जीसैट उपग्रहों पर निर्भर है। PSLV-C51 द्वारा इसरो की वाणिज्यिक शाखा, न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड (NSIL) का यह पहला समर्पित मिशन था
- नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर स्पेस रिसर्च (आईएनपीई) का ऑप्टिकल अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट अमेज़ोनिया-1, अमेज़ॅन क्षेत्र में वनों की कटाई की निगरानी और ब्राजील के क्षेत्र में विविध कृषि के विश्लेषण के लिये उपयोगकर्ताओं को रिमोट सेंसिंग डेटा प्रदान करेगा।

यूनिटीसैट (तीन उपग्रह):

- इन्हें रेडियो रिले सेवाएँ प्रदान करने के लिये तैनात किया गया है।

सतीश धवन उपग्रह:

- सतीश धवन उपग्रह (SDSAT) एक नैनो उपग्रह है जिसका उद्देश्य विकिरण स्तर/अंतरिक्ष मौसम का अध्ययन करना और लंबी दूरी की संचार प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन करना है।

आगामी मिशन:

- **गगनयान मिशन:** भारत का पहला अंतरिक्ष मिशन, गगनयान, वर्ष 2023 में लॉन्च किया जाएगा।
- **चंद्रयान-3 मिशन:** चंद्रयान-3 के 2022 की तीसरी तिमाही के दौरान लॉन्च होने की संभावना है।

तीन भू प्रेक्षण उपग्रह (EOSs):

- EOS-4 (Resat-1A) और EOS-6 (Oceansat-3) - को इसरो के PSLV का उपयोग करके लॉन्च किया जाएगा, तीसरा, EOS-2 (माइक्रोसैट), स्माल सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (SSLV) की पहली विकासात्मक उड़ान से लॉन्च किया जाएगा।
- इन उपग्रहों को वर्ष 2022 की पहली तिमाही में लॉन्च किया जाएगा।

अन्य:

- **शुक्रयान मिशन:** इसरो भी शुक्र ग्रह के लिये एक मिशन की योजना बना रहा है, जिसे अस्थायी रूप से शुक्रयान कहा जाता है।
- **स्वयं का अंतरिक्ष स्टेशन:** भारत वर्ष 2030 तक अपना खुद का अंतरिक्ष स्टेशन लॉन्च करने की योजना बना रहा है, जो अमेरिका, रूस और चीन की लीग में एक विशिष्ट अंतरिक्ष क्लब में शामिल हो गया है।

ग्रेट रेज़िगनेशन

- हाल ही में कोविड-19 के बाद बड़ी संख्या में लोग **"एंटीवर्क"** के सिद्धांत को अपनाकर अपनी नौकरी से बाहर निकल रहे हैं विशेष कर अमेरिका और यूरोपीय देशों में।

- **यूएस ब्यूरो ऑफ लेबर स्टैटिस्टिक्स (BLS)** के अनुसार, अगस्त 2021 में रिकॉर्ड 4.3 मिलियन लोगों ने इस्तीफा दिया, जो जुलाई से 2,42,000 अधिक है।
- अमेरिकी मनोवैज्ञानिक **एंथनी क्लॉट्ज़** ने इसे "**ग्रेट रेज़िगनेशन**" कहा है जो कार्य-जीवन समीकरण में प्राथमिकताओं को फिर से तैयार करने का आह्वान है।

कोविड का प्रभाव:

- कार्य से बाहर निकलने वालों में प्रमुख रूप से **खुदरा और आतिथ्य क्षेत्र के वे कर्मचारी** शामिल हैं जो नौकरी बदलने या अपने विकल्पों का पुनर्मूल्यांकन करने के इच्छुक थे।
- मध्य और पूर्वी यूरोप के कई देशों ने **कुशल श्रम शक्ति में गिरावट दर्ज** की है।
- हालाँकि यह मज़बूत सामाजिक सुरक्षा जाल के कारण हो सकता है।
- महामारी और लॉकडाउन के मध्य जीवित रहना और इसका सामना करना कई लोगों को 'काम-मुक्त' जीवन को एक व्यवहार्य विकल्प के रूप में देखने हेतु प्रेरित करता है।

'ग्रेट रेज़िगनेशन' का महत्त्व

- कम वेतन, अव्यावहारिक कार्य समय-सीमा और खराब लीडरशिप या बॉस आदि से संबंधित समस्याओं ने 'ग्रेट रेज़िगनेशन' को और अधिक बढ़ावा दिया है।
- इसका मतलब यह भी है कि इन श्रमिकों के पास अपने मौजूदा नियोक्ताओं से परे बाज़ार मूल्य मौजूद हैं और वे इससे अधिक बेहतर रोज़गार प्राप्त कर सकते हैं।
- वे बेहतर नौकरी के अवसर प्राप्त करने या स्टार्ट-अप चुनने के लिये अपने अनुभव पर भरोसा करते हैं।
- एक सामान्य आशंका यह भी है कि क्षमता निर्माण में पर्याप्त पूंजी आवंटन नहीं किया गया है।

भारत की स्थिति:

- सामाजिक सुरक्षा और बेरोज़गारी लाभ की अनुपस्थिति के कारण भारत में ऐसी कोई घटना नहीं देखी गई है।

- नौकरियों से बाहर निकलने की विलासिता या विशेषाधिकार भारत में अधिकांश लोगों के लिये उपलब्ध नहीं था।
- हालाँकि 'रिमोट वर्किंग' या 'वर्क फ्रॉम होम' ने कॉरपोरेट्स और कर्मचारियों के लिये लचीले वर्क मॉडल को संभव बना दिया है।
- इससे टियर-II और टियर-III शहरों में लोगों की नौकरियाँ जा रही हैं। जिससे भारत की स्थानिक अर्थव्यवस्था में बदलाव आ रहा है।
- साथ ही वर्क फ्रॉम होम ने बाज़ार में मांग संरचना में बदलाव को गति दी है।
- इसके अलावा भारतीय आईटी और आईटीईएस क्षेत्रों में भी लोग अपनी नौकरी बदल रहे हैं।
- कई स्टार्ट-अप यूनिकॉर्न बन गए हैं और कई थोक में काम पर रख रहे हैं तथा काफी अधिक भुगतान करने के लिये तैयार हैं।

स्ट्रीट्स फॉर पीपल चैलेंज

- आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय (Ministry of Housing and Urban Affairs- MoHUA) ने **स्ट्रीट्स फॉर पीपल चैलेंज** के लिये **ग्यारह विजेता शहरों की घोषणा** की और **नर्चरिंग नेबरहुड चैलेंज** के पायलट चरण के लिये दस विजेता शहरों की घोषणा की।

स्ट्रीट्स फॉर पीपल चैलेंज:

- यह **शहरों के नेतृत्त्व वाली एक एक डिज़ाइन प्रतियोगिता** है।
- यह प्रतियोगिता हितधारकों और नागरिकों के परामर्श से **लोगों के लिये सड़कों की एकीकृत दृष्टि** विकसित करने हेतु देश भर के शहरों का समर्थन करती है।

- इसके तहत प्रत्येक शहर **स्थान, समय-सीमा और पुरस्कारों पर विशिष्ट विवरण के साथ अपनी खुद की डिज़ाइन प्रतियोगिता** शुरू करता है।

नर्चरिंग नेबरहुड चैलेंज:

- यह एक **तीन वर्षीय कार्यक्रम** है जिसका उद्देश्य भारतीय शहरों और अन्य भागीदारों के साथ मिलकर सार्वजनिक स्थान, गतिशीलता, पड़ोस योजना, प्रारंभिक बचपन संबंधी सेवाओं और सुविधाओं तक सभी की पहुँच तथा शहरी एजेंसियों के डेटा प्रबंधन में सुधार करने के लिये विभिन्न मानकों एवं तरीकों का समर्थन करना है।
- यह सभी **स्मार्ट शहरों**, **5,00,000 से अधिक आबादी वाले अन्य शहरों और राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की राजधानियों के लिये** खुला होगा।

क्षमता निर्माण में शहरों को निम्नलिखित हेतु तकनीकी एवं अन्य प्रकार की सहायता प्राप्त होगी:

- पार्कों एवं खुले स्थानों की पुनः परिकल्पना
- बाल-देखभाल सुविधाओं तक पहुँच में सुधार
- बचपन उन्मुख सुविधाओं के साथ सार्वजनिक स्थानों को अपनाना
- छोटे बच्चों और परिवारों के लिये सुलभ, सुरक्षित, चलने योग्य सड़कों का निर्माण

अन्य नवीनतम पहलें:

- इंडिया साइकिल्स4चेंज चैलेंज
- जलवायु स्मार्ट शहरों का आकलन ढाँचा (CSCAF) 2.0

अंतरिक्ष स्टेशन

- चीन, वर्ष 2024 या अधिकतम वर्ष 2030 तक, एक अपना निजी 'अंतरिक्ष स्टेशन' (Space Station) रखने वाला देश और संभवतः इकलौता देश बनने के लिए तैयार है।
- भारत द्वारा भी आगामी कुछ वर्षों में अपना अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करने की योजना बनाई जा रही है।
- हाल ही में, केंद्रीय अंतरिक्ष मंत्री जितेंद्र सिंह ने संसद में, वर्ष 2030 तक भारत का पहला अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित किए जाने की घोषणा की थी।

पृष्ठभूमि:

- यद्यपि, वर्तमान में 'अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन' (International Space Station- ISS) का कार्यकाल वर्ष 2024 में समाप्त होना निर्धारित है, किंतु नासा (NASA) और इस परियोजना के अन्य अंतरराष्ट्रीय भागीदारों ने 'अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन' (ISS) के परिचालन जीवन को वर्ष 2030 तक बढ़ाए जाने के संकेत दिए हैं।

चीनी अंतरिक्ष स्टेशन के बारे में:

- चीन का नया मल्टी-मॉड्यूल 'तिआनगोंग' (Tiangong) अंतरिक्ष स्टेशन कम से कम 10 वर्षों तक कार्य करने के तैयार हो चुका है।
- यह अंतरिक्ष स्टेशन पृथ्वी की सतह से 340-450 किमी की ऊंचाई पर पृथ्वी की निचली कक्षा में कार्य करेगा।

चीनी अंतरिक्ष स्टेशन का महत्व:

- पृथ्वी की निचली कक्षा में स्थित चीनी अंतरिक्ष स्टेशन, चीन की आकशीय दृष्टि की भांति कार्य करेगा, और यह चीन के अंतरिक्ष यात्रियों के लिए, विश्व के बाकी हिस्सों का चौबीसों घंटे विहंगम दृश्य प्रदान करेगा।
- यह अंतरिक्ष स्टेशन, चीन को वर्ष 2030 तक एक प्रमुख अंतरिक्ष शक्ति बनने के लक्ष्य को हासिल करने में मदद करेगा।

संबंधित चिंताएं:

- चीन का अंतरिक्ष स्टेशन रोबोटिक-आर्म से लैस होगा जिस पर अमेरिका द्वारा इसके संभावित सैन्य अनुप्रयोगों में उपयोग किए जाने पर चिंता जताई है।
- चिंता की बात यह है कि इस तकनीक का "भविष्य में अन्य उपग्रहों से साथ मॉल-युद्ध करने में इस्तेमाल किया जा सकता है"।

भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन:

- भारत द्वारा वर्ष 2030 तक अपना 'स्पेस स्टेशन' लॉन्च करने की योजना बनाई जा रही है।
- भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (Indian space station), अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन की तुलना में बहुत छोटा (20 टन द्रव्यमान) होगा और इसका उपयोग सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण प्रयोगों (अंतरिक्ष पर्यटन के लिए नहीं) करने के लिए किया जाएगा।
- अंतरिक्ष स्टेशन के लिए प्रारंभिक योजना के तहत, अंतरिक्ष यात्रियों को 20 दिनों तक अंतरिक्ष में ठहराया जाएगा। यह परियोजना 'गगनयान मिशन' का एक विस्तार होगी।
- यह अंतरिक्ष स्टेशन लगभग 400 किमी की ऊंचाई पर पृथ्वी की परिक्रमा करेगा।
- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) द्वारा एक अंतरिक्ष डॉकिंग प्रयोग (space docking experiment – Spadex) पर कार्य किया जा रहा है। यह अंतरिक्ष स्टेशन को कार्यात्मक बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण तकनीक है।

अन्य अंतरिक्ष स्टेशन:

- वर्तमान में, अंतरिक्षीय कक्षा में एकमात्र अंतरिक्ष स्टेशन, 'अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन' (ISS) कार्यरत है। आईएसएस, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, यूरोप, जापान और कनाडा का अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्रोजेक्ट है।
- चीन द्वारा अब तक 'तिआनगोंग-1' और 'तिआनगोंग-2' नामक दो परीक्षण अंतरिक्ष स्टेशनों को अंतरिक्षीय कक्षा में भेजा जा चुका है।

महत्व:

- 'अंतरिक्ष स्टेशन', विशेष रूप से जैविक प्रयोगों के लिए सार्थक वैज्ञानिक डेटा एकत्र करने हेतु आवश्यक होते हैं।
- 'अंतरिक्ष स्टेशन', अन्य अंतरिक्ष वाहनों पर उपलब्ध वैज्ञानिक अध्ययनों की तुलना में अधिक संख्या में और लंबे समय तक वैज्ञानिक अध्ययन के लिए प्लेटफ़ॉर्म प्रदान करते हैं।
- चालक दल का प्रत्येक सदस्य, अंतरिक्ष स्टेशन पर हफ्तों या महीनों तक रहता है, लेकिन उसके अंतरिक्ष में निवास की अवधि प्रायः एक वर्ष से अधिक नहीं होती है।
- अंतरिक्ष स्टेशनों का उपयोग, मानव शरीर पर लंबी अवधि की अंतरिक्ष उड़ान के प्रभावों का अध्ययन करने के लिए भी किया जाता है।

हाइब्रिड आतंकवादी

- हाइब्रिड आतंकवादी वे लोग होते हैं जिन्हें आतंकवादी समूहों द्वारा केवल एक या दो मिशनों को अंजाम देने के लिए लाया जाता है। वे मूल रूप से आतंकवादी समूहों की सहायता करते हैं।
- उदाहरण के लिए, आतंकवादियों को हथियार रखने की अनुमति देने वाले दुकानदार, सूचना देने वाले लोग आदि हाइब्रिड आतंकवादी हैं।
- वे अस्थायी या अनुबंध मजदूरों की तरह होते हैं। वे आतंकवादी समूह का हिस्सा नहीं होते हैं। हालांकि, वे एक विशिष्ट कार्य को अंजाम देने के लिए प्रशिक्षित होते हैं।

भारत में हाइब्रिड आतंकवादी

- जम्मू-कश्मीर में हाईब्रिड आतंकी बढ़ते जा रहे हैं। आतंकवादी समूह राजनीतिक कार्यकर्ताओं, नागरिकों और अल्पसंख्यक समुदायों के लोगों को हाइब्रिड आतंकवादी में बदलने के लिए उन्हें निशाना बना रहे हैं।
- इन हाइब्रिड आतंकवादियों को आतंकवादी समूहों द्वारा कट्टर बनाया जाता है। फिर उन्हें स्टैंडबाय मोड पर रखा जाता है।
- उन्हें आतंकी घटना को अंजाम देने के लिए सही समय पर लॉन्च किया जाता है। हाइब्रिड आतंकवादियों को लक्ष्य को मारने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

चुनौतियाँ

- सुरक्षा बलों के सामने सबसे पहली और सबसे बड़ी चुनौती पहचान की है। हाइब्रिड आतंकवादियों के स्थान या ठिकाने का पता लगाना बेहद मुश्किल है।
- उन्हें रोकना या गिरफ्तार करना या मुठभेड़ों के जरिए समाप्त करना भी मुश्किल है। हाइब्रिड आतंकवादियों की पहचान करने के लिए साइबर पेट्रोल और तकनीकी गैजेट ही दो तरीके हैं।

नार्को आतंक और हाइब्रिड आतंकवादी

- नार्को टेरर (narcotics terrorism) में नशीले पदार्थों से कमाए गए पैसे का इस्तेमाल गैरकानूनी गतिविधियों में किया जाता है।
- नार्को आतंकी इस पैसे का इस्तेमाल मादक पदार्थों की तस्करी के जरिए हथियार और गोला-बारूद खरीदने में करते हैं।
- आतंकवादी मादक पदार्थों की तस्करी से अर्जित धन का उपयोग हाइब्रिड आतंकवादियों को भुगतान करने के लिए करते हैं।

भविष्य के खतरे

- लगभग 300 प्रशिक्षित हाइब्रिड आतंकवादी कश्मीर घाटी में घुसपैठ करने के लिए लॉन्च पैड का इंतजार कर रहे हैं। उन्हें अलग-अलग आतंकी गतिविधियाँ सौंपी गई हैं।

- सैन्य अधिकारियों के अनुसार, वे कुपवाड़ा और गुरेज सेक्टर से प्रवेश करने की योजना बना रहे हैं।

‘कॉलरवाली’ बाघिन

- भारत के पेंच टाइगर रिजर्व में ‘कॉलरवाली’ बाघिन की हाल ही में मृत्यु हो गई। मध्य प्रदेश राज्य के वन विभाग द्वारा ‘कॉलरवाली’ बाघिन’ का अंतिम संस्कार किया गया। 16 साल की उम्र में इस बाघिन की मौत हुई।

कॉलरवाली बाघिन (Collarwali Tigress)

- कॉलरवाली बाघिन का जन्म 2005 में हुआ था। उसने पेंच टाइगर रिजर्व में बाघों की आबादी बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।उसने अपने जीवन काल में 29 शावकों को जन्म दिया। यह एक विश्व रिकॉर्ड है।
- 2005 में, कॉलरवाली बाघिन ने तीन शावकों को जन्म दिया। वे जीवित नहीं रहे।
- 2018 में उसने चार शावकों को जन्म दिया था।
- 2010 में, उसने पांच शावकोंको जन्म दिया। तीन या चार से अधिक शावकों को जन्म देने वाली बाघिनें बहुत दुर्लभ हैं। इसी वजह से उन्हें “सुपरमॉम” कहा जाता था।

नाम कारण

- इस बाघिन को कॉलर पहनाया गया था। जंगल में बाघों की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए उन्हें कॉलर पहनाया जाता है। पेंच टाइगर रिजर्व में कॉलर पाने वाली वह पहली बाघिन हैं।

महत्व

- टाइगर रिजर्व देश के राष्ट्रीय पशु के संरक्षण के लिए शुरू किए गए थे। हालाँकि, आज ये बाघ अभयारण्य पर्यटकों को आकर्षित कर रहे हैं और देश में पर्यटन में सुधार कर रहे हैं।
- भारत सरकार की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया के 70% बाघ भारत में हैं। भारत में बाघों की संख्या करीब तीन हजार है।

पेंच टाइगर रिजर्व

- महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में स्थित इस टाइगर रिज़र्व का नामकरण प्राचीन पेंच नदी के नाम पर किया गया है।
- पेंच नदी, 'पेंच टाइगर रिज़र्व' के बीच से होकर गुज़रती है।
- यह नदी उत्तर से दक्षिण की ओर बहती है तथा संपूर्ण रिज़र्व को पूर्वी और पश्चिमी हिस्सों में विभाजित करती है।
- यह रिज़र्व मध्य प्रदेश के सिवनी और छिंदवाड़ा ज़िलों में सतपुड़ा पहाड़ियों के दक्षिणी छोर पर स्थित है और महराष्ट्र के नागपुर ज़िले तक विस्तारित है।
- वर्ष 1975 में इसे महाराष्ट्र सरकार द्वारा एक राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया और वर्ष 1998-1999 में इसे एक टाइगर रिज़र्व की मान्यता प्रदान की गई गई।
- उल्लेखनीय है कि पेंच टाइगर रिज़र्व (PTR) के मध्य प्रदेश स्थित हिस्से को वर्ष 1992-1993 में ही टाइगर रिज़र्व का दर्जा दे दिया गया था। यह केंद्रीय उच्च भूमि/सेंट्रल हाइलैंड्स के सतपुड़ा-मैकल पर्वतमाला के प्रमुख संरक्षित क्षेत्रों में से एक है।
- यह भारत के महत्त्वपूर्ण पक्षी क्षेत्रों (IBA) के रूप में अधिसूचित स्थलों/साइटों में से एक है।
- IBA बर्डलाइफ इंटरनेशनल का एक कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य विश्वभर के पक्षियों और संबंधित विविधता के संरक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण पक्षी क्षेत्रों के वैश्विक नेटवर्क की पहचान, निगरानी और सुरक्षा करना है।

वनस्पति

- संपूर्ण रिज़र्व में हरित आवरण विस्तारित है।
- यहाँ चौड़ी पत्ती वाले शुष्क वन तथा उष्णकटिबंधीय मिश्रित पर्णपाती वन पाए जाते हैं।
- यहाँ औषधीय तथा उपचारात्मक गुणों से युक्त कुछ विशिष्ट किस्म के पौधे और वनस्पतियाँ मौजूद हैं।
- रिज़र्व के आस-पास के जल निकायों में बाँस भी पाए जाते हैं।

प्राणि जगत

स्तनधारी

- यहाँ पाए जाने वाले स्तनधारियों में स्लॉथ बियर/सुस्त भालू, सियार, नीलगाय, जंगली कुत्ता आदि शामिल हैं।

पक्षी

- मोर, मैगपाई रॉबिन, पिनटेल, ड्रोंगो, मैना आदि यहाँ पाई जाने वाली प्रमुख पक्षी प्रजातियाँ हैं।

सारथी मोबाइल ऐप

- हाल ही में **भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड** (SEBI) ने निवेशकों को शिक्षित करने वाला एक मोबाइल एप सारथी लॉन्च किया है।

परिचय:

- इसका उद्देश्य निवेशकों के बीच प्रतिभूति बाज़ार की बुनियादी अवधारणाओं के बारे में जागरूकता पैदा करना है।
- यह एप केवाईसी प्रक्रिया, व्यापार और निपटान, म्यूचुअल फंड (एमएफ), हालिया बाज़ार के विकास, निवेशक शिकायत निवारण तंत्र आदि के बारे में भी बताएगा।

आवश्यकता:

- हाल ही में व्यक्तिगत निवेशकों के बाज़ार में प्रवेश करने में वृद्धि देखी गई है, और इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि व्यापार का एक बड़ा हिस्सा मोबाइल फोन आधारित है।
- 'नेशनल स्टॉक एक्सचेंज' के आँकड़ों के अनुसार, व्यक्तिगत निवेशकों की हिस्सेदारी वर्ष 2021 में बढ़कर 45% हो गई, जो वर्ष 2020 में 39% थी।
- 'नेशनल स्टॉक एक्सचेंज' भारत का सबसे बड़ा वित्तीय बाज़ार है।

प्रतिभूति बाज़ार:

- प्रतिभूतियाँ एक प्रकार का वित्तीय साधन हैं, जो धन जुटाने हेतु जारी किये जाते हैं।
- प्रतिभूति बाज़ारों का प्राथमिक कार्य उन लोगों से पूंजी के प्रवाह को सक्षम करना है, जिनके पास इसकी अधिकता है।
- प्रतिभूति बाज़ार निवेश के लिये धन के आवंटन हेतु चैनल प्रदान करते हैं और इस तरह इन दोनों गतिविधियों को अलग कर देते हैं।
- नतीजतन, बचतकर्त्ता और निवेशक अपनी व्यक्तिगत क्षमताओं की वजह से विवश नहीं होते हैं, बल्कि अर्थव्यवस्था की क्रमशः निवेश तथा बचत करने की क्षमता से बाध्य होते हैं जो अनिवार्य रूप से अर्थव्यवस्था में बचत एवं निवेश को बढ़ाता है।
- उदाहरण: इक्विटी, ऋण प्रतिभूतियाँ आदि।

भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (Securities and Exchange Board of India -SEBI):

- SEBI 12 अप्रैल, 1992 को **भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड अधिनियम, 1992** के प्रावधानों के तहत स्थापित एक वैधानिक निकाय है।

- इसका मूल कार्य प्रतिभूतियों में निवेशकों के हितों की रक्षा करना और प्रतिभूति बाज़ार को बढ़ावा देना तथा विनियमित करना है।
- सेबी बोर्ड में एक अध्यक्ष और कुछ अन्य पूर्णकालिक व अंशकालिक सदस्य होते हैं।
- सेबी समय पर जब भी आवश्यक हो के दबाव वाले मुद्दों को देखने के लिये, विभिन्न समितियों की नियुक्ति भी करता है।

इस्टर्न स्वैंप डियर

- हाल ही में काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान और टाइगर रिज़र्व (असम) में सुभेद्य इस्टर्न स्वैंप डियर की आबादी में गिरावट आई है। इस्टर्न स्वैंप डियर दक्षिण एशिया में अन्य स्थानों से विलुप्त हो गया है।

- वर्ष 2019 और वर्ष 2020 में आईं बाढ़ों को इस गिरावट का कारण माना जा सकता है।
- हालाँकि, इसका सकारात्मक पक्ष यह है कि 'स्टर्न स्वैंप डियर' अब काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी पाया जाता है, जैसे कि **ओरंग राष्ट्रीय उद्यान** और लाओखोवा-बुराचापोरी वन्यजीव अभयारण्य (असम)।

दलदली हिरण के बारे में:

- भारतीय उपमहाद्वीप में **दलदली हिरण** की तीन उप-प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
- पश्चिमी **दलदली हिरण** (Rucervus duvaucelii) नेपाल में पाया जाता है।
- मध्य और उत्तर भारत में पाए जाने वाले दक्षिणी **दलदली हिरण** /हार्ड ग्राउंड बारासिंघा (Rucervus duvaucelii branderi)।

- काजीरंगा (असम) और दुधवा राष्ट्रीय उद्यानों (उत्तर प्रदेश) में पाए जाने वाले पूर्वी **दलदली हिरण** (Rucervus duvaucelii ranjitsinhi)।

दलदली हिरण की संरक्षण स्थिति:

- **IUCN की लाल सूची:** सुभेद्य
- **CITES:** परिशिष्ट ।
- **वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972: अनुसूची ।**

स्टार्टअप दिवस

- मौजूदा वक्त में देश में लगभग 60,000 स्टार्टअप्स हैं। इनमें से 44 यूनिकॉर्न हैं। यूनिकॉर्न का मतलब ये होता है कि उस स्टार्टअप का वैल्यूएशन 7 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा है।
- साथ ही, भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम है। अकेले साल 2020 में यहां लगभग 15,000 से अधिक स्टार्टअप्स की स्थापना हुई। यही कारण है कि स्टार्टअप्स और इसके इकोसिस्टम को बढ़ावा देना सरकार की प्राथमिकता में शामिल है।
- दरअसल हाल ही में प्रधानमंत्री ने घोषणा की है कि अब से हर साल 16 जनवरी को देश में स्टार्टअप दिवस मनाया जाएगा।
- इसके अलावा, अभी हाल ही में 46 स्टार्टअप्स के साथ एक इनक्यूबेटर और एक एक्सेलेरेटर को राष्ट्रीय स्टार्टअप पुरस्कारों 2021 का विजेता घोषित किया गया।
- इसमें विजेता स्टार्टअप संस्थापकों को 5 लाख रुपए का नकद पुरस्कार और संबंधित सरकारी प्राधिकरणों एवं कॉरपोरेट्स के सामने अपने

सलूशन को पेश करने का मौका मिलेगा। इनक्यूबेटर और एक्सेलेरेटर को जीत की राशि के रूप में 15 लाख रुपए मिलेंगे।

- स्टार्टअप नई आईडिया वाली एक ऐसी कंपनी होती है जिसने हाल ही में अपना कामकाज शुरू किया हो।
- नए कारोबारी एक नए आइडिया पर मिलकर काम करते हैं। इस तरह की कंपनी के जरिए ग्राहकों को एक नए तरह के प्रोडक्ट या सर्विस दी जाती है। स्टार्टअप सफल होने के बाद ये एक बड़ी कंपनी के तौर पर अपनी पहचान बना लेते हैं।
- भारत सरकार ने स्टार्टअप्स की कुछ परिभाषा तय की हुई है जैसे कि ऐसे कंपनी का मुख्यालय भारत में स्थित होना चाहिए; उसकी वार्षिक आय 100 करोड़ रूपये से ज्यादा नहीं होना चाहिए; इसकी शुरुआत हुए 10 वर्ष से अधिक न हुआ हो और उसके पास कुछ नया आईडिया होना चाहिए।
- मौजूदा वक्त में 5 सेक्टर में स्टार्टअप ग्रोथ सबसे ज्यादा देखी जा रही है, जिसमें क्लाउड कंप्यूटिंग और बिग डाटा, शिक्षा, मोबाइल, सोशल मीडिया और ई-कॉमर्स शामिल हैं।
- देश में नवाचार और स्टार्टअप इकोसिस्टम को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने साल 2016 में एक स्टार्टअप इंडिया पहल लॉन्च किया था।
- इसमें तीन-चार मुख्य बातों पर फोकस किया गया जैसे कि सरलीकरण और हैंडहोल्डिंग, वित्तपोषण सहायता एवं प्रोत्साहन, उद्योग-अकादमी भागीदारी और इन्क्यूबेशन आदि।
- कार्यक्रम को उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्द्धन विभाग (DPIIT), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा डिजाइन किया गया था।
- इसके अलावा, भारत में स्टार्टअप इकोसिस्टम को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा कई अन्य कदम भी उठाए गए हैं।
- जिसमें स्टार्टअप इकोसिस्टम के आधार पर राज्यों की रैंकिंग तैयार करना, SCO स्टार्टअप फोरम, 'प्रारंभ' (Prarambh) शिखर सम्मेलन का आयोजन किया जाना, स्टार्टअप इंडिया सीड फंड योजना और फिशरीज़ स्टार्टअप ग्रैंड चैलेंज जैसे पहल शामिल हैं।
- हालाँकि, अभी भी कई ऐसी चुनौतियाँ मौजूद हैं जो भारत में स्टार्टअप्स की वास्तविक क्षमता को साकार करने की राह में बाधा बनी हुई हैं,

उदाहरण के तौर पर क्षेत्रीय असंतुलन, डिजिटल डिवाइड, फंडिंग की समस्या और अच्छे कर्मचारियों की हायरिंग जैसे मुद्दे अगर सुलझते हैं तो इससे स्टार्टअप इकोसिस्टम को और गति मिल सकती है।

- इस दिशा में और भी बेहतर करने के लिए विशेषज्ञ सुझाते हैं कि हमें स्कूली स्तर पर भी उद्यम कौशल के बारे में बच्चों को जागरूक करने की जरूरत है।
- इसके अलावा, कृषि से संबंधित स्टार्टअप्स को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए। उदाहरण के तौर पर जम्मू में डोडा ज़िले के गाँवों के लगभग 500 किसान जो कि पहले मक्के की खेती किया करते थे बाद में धीरे-धीरे वे लैवेंडर की खेती करने लगे।
- लैवेंडर की खेती की वजह से इन किसानों की आय में चौगुनी वृद्धि हुई है। इसे ही 'बैगनी क्रांति' का नाम दिया जा रहा है।
- यह अरोमा मिशन के तहत की गई पहल के कारण संभव हो पाया है।
- मेंथा, खस, पामारोजा, जिरेनियम जैसी कई सगंध फसलें उन इलाकों में भी हो सकती हैं जहां पानी कम बरसता है और वहां भी जहां कई बार बाढ़ आ जाती है।
- कम लागत में पैदा होने वाली ऐसी फसलों को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने एरोमा मिशन शुरु किया है।

ऑपरेशन सर्द हवा

- BSF (Border Security Force) ने ऑपरेशन सर्द हवा शुरू किया। इस ऑपरेशन के तहत BSF ने पाकिस्तान सीमा पर चौकसी बढ़ा दी है। यह आमतौर पर राजस्थान की सीमा में लॉन्च किया जाता है, खासकर जैसलमेर क्षेत्र में।
- यह एक नियमित वार्षिक अभ्यास है। इसे जनवरी के महीने में लॉन्च किया जाता है।

ऑपरेशन सर्द हवा क्या है?

- 'ऑपरेशन सर्द हवा' सर्दियों के दौरान और 'ऑपरेशन गर्म हवा' गर्मियों के दौरान आयोजित किया जाता है। ये ऑपरेशन सीमाओं में घुसपैठ को नियंत्रित करने के लिए किए जाते हैं।
- सर्दियों के दौरान घना कोहरा सीमा क्षेत्र में दृष्टि को अवरुद्ध करता है। आतंकवादियों के लिए सीमा पार करने के लिए यह परिदृश्य बेहद फायदेमंद है।
- सुरक्षा बलों के लिए इस मौसम में सतर्क रहना जरूरी है। BSF इसी वजह से सर्दियों में ऑपरेशन सर्द हवा चलाती है।
- इस साल ऑपरेशन सर्द हवा 23 जनवरी से 28 जनवरी के बीच आयोजित किया जायेगा।
- इस ऑपरेशन के दौरान अधिकारी और कर्मी सीमा के पास रहते हैं। और लगातार पेट्रोलिंग की जाती है।
- इस ऑपरेशन के दौरान इंटेलिजेंस विंग को सक्रिय मोड पर रखा जाता है। सीमा पर तैनात जवानों की संख्या बढ़ाई जाती है। जवान उन्नत हथियारों से थानों के आसपास के इलाकों में गश्त करते हैं।
- साथ ही ऊंट, फुट प्वॉइंट ट्रेकिंग में जवान सीमावर्ती इलाकों पर नजर रखते हैं। वे पैदल घुसपैठियों पर भी जाँच करते हैं।

महत्व

- हाल ही में सीमा पर संघर्ष विराम उल्लंघन में कमी आई है। ऐसे समय में पाकिस्तानी सेना भारत पर हमला करने के लिए छद्म युद्ध (proxy wars) का सहारा लेती है। इसलिए सीमा सुरक्षा बल के लिए हाई अलर्ट पर रहना जरूरी है। इसलिए ऑपरेशन सर्द हवा महत्वपूर्ण है।

ऑपरेशन गर्म हवा (Operation Garam Hawa)

- यह गर्मियों के दौरान आयोजित किया जाता है। राजस्थान में इसका आयोजन होता है। गर्मी की लहर की स्थिति के दौरान घुसपैठ की संभावना अधिक होती है।

- ऑपरेशन सर्द हवा की तरह यह ऑपरेशन BSF द्वारा चलाया जाता है। यह आमतौर पर मई या जून के महीने में आयोजित किया जाता है जब गर्मी की लहरें चरम पर होती हैं।

नुसंतारा (Nusantara)

- इंडोनेशिया अपनी नई राजधानी को बदलने जा रहा है। यह पूर्वी कालीमंतन (East Kalimantan) है। इसे अब नुसंतारा (Nusantara) कहा जाता है। पहले जकार्ता इंडोनेशिया की राजधानी थी।

नुसंतारा (Nusantara)

- पूर्वी कालीमंतन बोर्नियो द्वीप (Borneo island) में स्थित है। राजधानी को यहां शिफ्ट करने की योजना की घोषणा 2019 में की गई थी। इसकी घोषणा राष्ट्रपति जोको विडोडो (Joko Widodo) ने की थी।

जकार्ता से बाहर जाने के कारण

- जकार्ता 1949 से इंडोनेशिया की राजधानी है। जकार्ता पर्यावरण और वित्तीय मुद्दों का सामना कर रहा है।
- जकार्ता में प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। इसे लगातार दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में से एक के रूप में स्थान दिया गया है। जकार्ता जावा द्वीप में है और नुसंतारा बोर्नियो द्वीप में है।
- बोर्नियो द्वीप का आकार जावा द्वीप से बड़ा है। वर्तमान में, जकार्ता घनी आबादी वाला शहर है। यह इंडोनेशियाई सरकार द्वारा वहन किए जाने वाले बोझ को बढ़ा रहा है। इसके अलावा, जकार्ता डूब रहा है।
- 2050 तक, अधिकांश जकार्ता के पानी के नीचे जाने की उम्मीद है। इसका मुख्य कारण यह है कि जकार्ता कई नदियों से घिरा हुआ

है। इन नदियों में बार-बार बाढ़ आने का खतरा रहता है। 2019 और 2020 के बीच जकार्ता के कई शहर 10.7 सेंटीमीटर तक डूब गए।

योजना क्या है?

- सभी सरकारी संस्थानों, राष्ट्रपति भवन, अंतर्राष्ट्रीय संगठन के भवनों और विदेशी दूतावास भवनों को नुसंतारा में स्थानांतरित किया जायेगा।
- इस योजना को क्रियान्वित करने के लिए 33 बिलियन डालर की लागत आएगी। नई राजधानी के निर्माण के लिए लगभग 2,56,142 हेक्टेयर भूमि आवंटित की गई है।

नुसंतारा का नाम कारण

- नुसंतारा का अर्थ है द्वीपसमूह (archipelago)। यह दार्शनिक, सामाजिक और ऐतिहासिक पहलुओं का प्रतिनिधित्व करता है।

चिंताएं

- नुसंतारा जैव विविधता में समृद्ध है। पर्यावरणविदों के अनुसार, राजधानी को नुसंतारा ले जाने से बड़े पैमाने पर वनों की कटाई होगी। साथ ही, यह क्षेत्र के पेड़ों और जानवरों को खतरे में डालेगा।

अन्य देश जिन्होंने हाल ही में अपनी राजधानी बदली है, वे इस प्रकार हैं:

- ब्राजील ने रियो डी जनेरियो से ब्रासीलिया में राजधानी शिफ्ट की। ब्रासीलिया अधिक केन्द्र में स्थित है।
- 1991 में नाइजीरिया ने अपनी राजधानी लागोस से बदलकर अबुजा कर ली।
- कजाकिस्तान ने अपनी राजधानी को आलम्टी से नूर-सुल्तान में बदल दिया।
- 2005 में, म्यांमार ने अपनी राजधानी को रंगून से बदलकर नैपीडॉ कर दिया।